SYLLABUS

SOCIOLOGY

समाजशास्त्रीय अवधारणाएँ

- समाजशास्त्र: अर्थ, प्रकृति, दायरा और महत्व
- मूल अवधारणाएँ: सामाजिक संरचना, सामाजिक कार्य, समाज, समुदाय, संघ, समूह, वर्ग, सक्रिय समाज, जोखिम समाज, स्थिति-भूमिका, वैश्वीकरण
- सामाजिक संस्थाएँ: परिवार, विवाह, रिश्तेदारी, जाति, धर्म
- आर्थिक संस्थाएँ: बाज़ार, पूँजी, संपत्ति और श्रम विभाजन
- राजनीतिक संस्थाएँ: अभिजात वर्ग, शक्ति, अधिकार, नौकरशाही, सत्ता का विकेंद्रीकरण, नेतृत्व, राजनीतिक दल

शास्त्रीय विचारक

I. ऑगस्टे कॉम्टे: सामाजिक सांख्यिकी और गतिकी, तीन चरणों का नियम, विज्ञान का पदानुक्रम, प्रत्यक्षवाद
II. हर्बर्ट स्पेंसर: जैविक सादृश्य और विकास का सिद्धांत
III. मैक्स वेबर: सामाजिक क्रिया, वर्स्टेन, आदर्श प्रकार, तर्कसंगतता
IV. एमिल दुर्खीम: सामाजिक तथ्य, श्रम विभाजन, आत्महत्या, धर्म
V. कार्ल मार्क्स: ऐतिहासिक भौतिकवाद, समाजों का वर्गीकरण, वर्ग संघर्ष, अलगाव, क्रांति
VI. लेवी-स्ट्रॉस: संरचनावाद
VII. रैडक्लिफ ब्राउन और मालिनोवस्की: कार्यात्मकतावाद

सामाजिक अनुसंधान की पद्धति

- सामाजिक अनुसंधान और सामाजिक सर्वेक्षण, सामाजिक अनुसंधान के अर्थ और चरण, अनुसंधान की नैतिकता (साहित्यिक चोरी, कॉपीराइट)
- डेटा संग्रह के मूल उपकरण: अवलोकन, साक्षात्कार, अनुसूची, प्रश्नावली, समाजमिति अध्ययन की तकनीक के संदर्भ में उदाहरणात्मक अध्ययन (प्रतिभागी अवलोकन)
- बी. मालिनोवस्की, 1966: पश्चिमी प्रशांत के अर्गोनॉट्स
- डब्ल्यू. एफ. व्हाइट, 1955: स्ट्रीट कॉर्नर सोसाइटी: इतालवी झुग्गी बस्ती की सामाजिक संरचना प्रत्येक के सामने उल्लिखित चित्रण के साथ चुनिंदा तकनीकों का अध्ययन:
- पैनल अध्ययन: योगेश अटल, 1972: स्थानीय समुदाय और राष्ट्रीय राजनीति: समुदायों के लिंक और राजनीतिक भागीदारी में एक अध्ययन
- स्केलिंग: एस.एल. शर्मा, 1979 में मनोवृत्ति आधुनिकता पैमाना: विश्वविद्यालय शिक्षा के आधुनिकीकरण प्रभाव

ग्रामीण समाजशास्त्र

I. ग्रामीण समाजशास्त्र का अर्थ, दायरा और महत्व।
II. अवधारणाएँ: छोटा समुदाय, किसान समाज, लोक संस्कृति, लोक-शहरी सातत्य, जनजाति और जाति, ग्रामीण समाज की विशेषताएँ
III. ग्रामीण सामाजिक संरचना: परिवार, विवाह और रिश्तेदारी, जाति और वर्ग
IV. ग्रामीण अर्थव्यवस्था: कृषि संबंध, भूमि सुधार, जजमानी प्रणाली, बाजार का विकास, हरित क्रांति
V. अनुष्ठान संबंधी पहलू: देवता, त्यौहार, जीवन चक्र के अनुष्ठान, ग्रामीणों का विश्व दृष्टिकोण, जादू और धर्म, सार्वभौमिकरण और संकीर्णीकरण

सामाजिक अनुसंधान में बुनियादी सांख्यिकी और कंप्यूटर अनुप्रयोग

I. सामाजिक अनुसंधान में सांख्यिकी की प्रासंगिकता, सामाजिक चर और उनका मापन, डेटा का समूहन, ग्राफिक प्रस्तुति - आवृत्ति वक्र, हिस्टोग्राम, सीएफसी।
II. औसत - माध्य, माध्यिका, बहुलक, मानक विचलन
III. अवधारणाएँ - संभाव्यता, मानक संचालन, विश्वसनीयता, वैधता, नमूनाकरण और इसके प्रकार।
IV. एसोसिएशन, सह-संबंध, सांख्यिकीय अनुमान,
V. सामाजिक अनुसंधान में कंप्यूटर का उपयोग (जैसे डेटा विश्लेषण में परिचय और उपयोग, डेटाबेस तक पहुँचने के लिए इंटरनेट का उपयोग)

नव-शास्त्रीय सिद्धांत

I. संरचनात्मक कार्यात्मक दृष्टिकोण: आर के मर्टन: मध्य श्रेणी के सिद्धांत, प्रतिमान, सामाजिक संरचना और विसंगति, कार्यात्मक विश्लेषण का संहिताकरण, संदर्भ समूह
II. सामाजिक प्रणाली: टी. पार्सन्स: संरचनात्मक तत्व और एजीआईएल प्रतिमान, सामाजिक प्रणाली
III. प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद: हर्बर्ट ब्लूमर और जी एच मीड
IV. विनिमय सिद्धांत: मालिनोवस्की - सामाजिक विनिमय, जॉर्ज सी होमन्स - सामाजिक व्यवहारवाद।
V. घटना विज्ञान और नृवंशविज्ञान: अल्फ्रेड शुट्ज़ - सामाजिक दुनिया की घटना विज्ञान, गारफिंकेल - रिफ्लेक्सिविटी, सामान्य ज्ञान तर्क, गोफमैन-नाटकीय विश्लेषण

सामाजिक परिवर्तन: अवधारणाएँ और सिद्धांत

I. अवधारणाएँ: सामाजिक परिवर्तन, विकास, प्रगति, सांस्कृतिक परिवर्तन, परिवर्तन, सामाजिक गतिशीलता, आंदोलन, क्रांति, आविष्कार, खोज, प्रसार।

II. सामाजिक परिवर्तन के सिद्धांत: विकासवादी, कार्यात्मक, रैखिक, चक्रीय

III. सामाजिक परिवर्तन के कारक: जनसांख्यिकी, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, तकनीकी

IV. विकास: विकास, सतत विकास

V. नियोजित परिवर्तन: सुरक्षात्मक भेदभाव की नीति, कानून

सामाजिक विज्ञान में स्पष्टीकरण

I. स्पष्टीकरण के तरीके, तुलनात्मक विश्लेषण का उपयोग

II. कुछ बुनियादी शब्द: प्रस्ताव, परिकल्पना, वर्गीकरण और परिभाषा

III. सामाजिक की प्रकृति। तथ्य, विशिष्टता और सामान्यता

IV. विस्तृत अध्ययन के लिए पुस्तकें: हर साल निम्नलिखित में से किसी एक का चयन किया जाएगा

A: दुर्खीम, ई., 1895: समाजशास्त्रीय पद्धति के नियम

B: मैक्स वेबर, 1968: प्रोटेस्टेंट नैतिकता और पूंजीवाद की भावना

V. सामाजिक विज्ञान में वस्तुनिष्ठता।

आधुनिक समाजशास्त्रीय सिद्धांत

I. नव-कार्यात्मकता: जे. अलेक्जेंडर

II. नव-मार्क्सवादी: शासक और शासित: डेरेनडॉर्फ, फ्रैंकफर्ट स्कूल - जीवन जगत और व्यवस्था: जे. हैबरनास्ट संघर्ष और सामाजिक परिवर्तन: कोलिन्स

III. सामाजिक संघर्ष का कार्यात्मक विश्लेषण: लुईस ए_ कोसर

IV. उत्तर संरचनावाद: फौकॉल्ट

V. समाजशास्त्रीय सिद्धांत में हाल के रुझान: संरचना: एंथनी गिडेंस, हैबिटस और फील्ड: बॉर्डियू, उत्तर आधुनिकतावाद: डेरिडा

भारत में सामाजिक परिवर्तन

I. सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाएँ: सार्वभौमिकरण, संकीर्णता, संस्कृतिकरण, पश्चिमीकरण, धर्मनिरपेक्षता, आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण।

II. सामाजिक परिवर्तन के अध्ययन के दृष्टिकोण: A. विकासवादी दृष्टिकोण B. सांस्कृतिक दृष्टिकोण C. संरचनात्मक दृष्टिकोण D. द्वंद्वात्मक ऐतिहासिक दृष्टिकोण

III. सामाजिक परिवर्तन के कारक: जनसांख्यिकीय, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, तकनीकी।

IV. भारत में सामाजिक आंदोलन: आर्य समाज, चिपको, बीके यू, युग निर्माण आंदोलन

V. विकास की आलोचना: पारिस्थितिक और नारीवादी परिप्रेक्ष्य

भारत में सामाजिक समस्याएँ

I. सामाजिक समस्याएँ: अस्पृश्यता, गरीबी, जनसंख्या समस्याएँ, साक्षरता, अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों, अन्य पिछड़ा वर्गों और अल्पसंख्यकों की समस्याएँ, सांप्रदायिकता

II. पारिवारिक समस्याएँ: दहेज, घरेलू हिंसा, किशोर अपराध, तलाक, बुजुर्गों की समस्याएँ, अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष,

III. आर्थिक समस्याएँ: गरीबी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, सफेदपोश अपराध

IV. महिलाओं की समस्याएँ: महिलाओं की स्थिति, वेश्यावृत्ति, महिला सशक्तिकरण

V. पर्यावरणीय समस्याएँ: ग्लोबल वार्मिंग, औद्योगीकरण, प्रदूषण, पारिस्थितिक असंतुलन,

समाजशास्त्र में वर्गीकरण

I. समाजशास्त्र में वर्गीकरण का अर्थ और प्रासंगिकता

II. वर्गीकरण के लिए सिद्धांत और मानदंड

III. सामाजिक प्रकार के वर्गीकरण के नियम

IV. समूहों का वर्गीकरण: समूह और अर्ध समूह, प्राथमिक और द्वितीयक समूह, समूह में और समूह से बाहर, सदस्यता और गैर-सदस्यता समूह

VI. समाजों का वर्गीकरण:

A. अगस्त कॉम्टे: धार्मिक, आध्यात्मिक, सकारात्मक चरण

B. एमिल दुर्खीम: यांत्रिक और जैविक समाज

C. हर्बर्ट स्पेंसर: उग्रवादी और औद्योगिक समाज

D. कार्ल मार्क्स: आदिम, प्राचीन, सामंती, पूंजीवादी

E. टोनीज़: गेमेइनशाफ्ट, गेसेलशाफ्ट

F. हेनरी मेन: स्थिति, अनुबंध समाज

G. कार्ल पॉपर: आदिवासी समाज, खुला समाज

भारतीय समाज पर परिप्रेक्ष्य

I. इंडोलॉजिकल / टेक्स्टुअल परिप्रेक्ष्य: जी.एस. घुर्ये, लुइस ड्यूमॉन्ट

II. संरचनात्मक-कार्यात्मक परिप्रेक्ष्य: एम.एन. श्रीनिवास, एस. सी. दुबे

III. मार्क्सवादी परिप्रेक्ष्य: ए.आर. देसाई, राम कृष्ण मुखर्जी

IV. सभ्यतागत परिप्रेक्ष्य: एन. के. बोस, सुरजीत सिन्हा

V. सबाल्टर्न परिप्रेक्ष्य: बी. आर. अंबेडकर, डेविड हार्डीमैन

भारत में समाज

I. भारतीय सामाजिक संरचना: जाति, वर्ग और जनजाति, धार्मिक समूह, ग्रामीण और शहरी समुदाय, मूल्य

II. हिंदू सामाजिक संगठन: वर्ण, आश्रम, धर्म, कर्म का सिद्धांत

III. संस्थाएँ:

A. सामाजिक संस्था: विवाह, परिवार, रिश्तेदारी

B. आर्थिक संस्था: संपत्ति, श्रम विभाजन, जजमानी प्रणाली,

C. धार्मिक संस्था: जादू और धर्म, टोटेम और वर्जना

IV. सामाजिक परिवर्तन के कारक: आर्थिक, धार्मिक, जनसांख्यिकी, तकनीकी, शैक्षिक, कानून

V. भरती चिंताएँ: गरीबी, निरक्षरता, वृद्धावस्था, जनसंख्या, भ्रष्टाचार, सफेदपोश अपराध, नैतिक पतन

पर्यावरण का समाजशास्त्र

I. प्रकृति, दायरा और अवधारणा: पारिस्थितिकी और पर्यावरण।
II. सैद्धांतिक दृष्टिकोण:
III. उभरते सैद्धांतिक प्रतिमान: अनुकूली पारिस्थितिकी तंत्र, सामाजिक और सांस्कृतिक मॉडल
IV. पर्यावरणीय मुद्दों पर सामाजिक चिंताएँ
(क) प्राकृतिक संसाधनों की कमी, सामाजिक वानिकी, संयुक्त वन प्रबंधन
(ख) जनसंख्या विस्फोट, प्रदूषण की सामाजिक लागत - उर्वरकों और कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग गरीबी, विकास
(ग) हरित राजनीति, पारिस्थितिकी-नारीवाद, गहन पारिस्थितिकी, जैव-क्षेत्रवाद, पारिस्थितिक आधुनिकीकरण;
(घ) नीतिगत नुस्खे।
V. पर्यावरण आंदोलन
(क) संगठन, विचारधाराएँ, कार्यक्रम, नेतृत्व, लोगों की भागीदारी
(ख) केस स्टडीज़
VI. प्राकृतिक पर्यावरण के विकास में बाधाएँ

सामाजिक आंदोलन का समाजशास्त्र

1. सामाजिक आंदोलन: अर्थ, परिभाषा, विशेषताएँ और सामाजिक आंदोलन के प्रकार
2. सामाजिक आंदोलन के घटक

3. सामाजिक आंदोलन और सामाजिक परिवर्तन - सुधार, पुनरुद्धार और क्रांति, विभाजन; प्रति आंदोलन; परिवर्तन और गिरावट।
4. सामाजिक आंदोलन के उद्भव के सिद्धांत: मार्क्सवादी और उत्तर-मार्क्सवादी, वेबरियन और उत्तर-वेबरियन, संरचनात्मक-कार्यात्मक
5. पारंपरिक सामाजिक आंदोलन: किसान आंदोलन, श्रमिक आंदोलन, आदिवासी आंदोलन, सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन
6. भारत में नए सामाजिक आंदोलन: दलित आंदोलन; महिला आंदोलन; पारिस्थितिकी और पर्यावरण आंदोलन, जातीय आंदोलन।

राजनीतिक समाजशास्त्र

I. मूल अवधारणाएँ: राजनीति का समाजशास्त्र, शक्ति, अधिकार, सत्ता का विकेंद्रीकरण, नौकरशाही, राजनीतिक दल, राजनीतिक संस्कृति, राजनीतिक समाजीकरण, राजनीतिक लामबंदी, राजनीतिक उदासीनता, मतदान व्यवहार, नेतृत्व
II. समाज में सत्ता के वितरण के अभिजात वर्ग के सिद्धांत: मोस्का, पारेतो और सी. डब्ल्यू. मिल्स
III. दबाव समूह और हित समूह: प्रकृति, आधार, राजनीतिक महत्व
IV. जनमत: जनसंचार माध्यमों की भूमिका, अशिक्षित और आधुनिक समाजों में संचार की समस्याएँ
V. भारत में राजनीतिक प्रक्रिया: भारतीय राजनीति में जाति, धर्म, क्षेत्रवाद और भाषा की भूमिका, चुनाव आयोग की भूमिका

शिक्षण शिक्षा और पद्धति

- 1. सीखना और सिखाना
- 2. पाठ्यक्रम में भाषा
- 3. अनुशासन और विषय को समझना
- 4. लिंग स्कूल और समाज
- 5. स्कूल विषय की शिक्षाशास्त्र
- 6. ज्ञान और पाठ्यक्रम
- 7. सीखने के लिए मूल्यांकन
- 8. समावेशी स्कूल बनाना
- 9. बचपन और बड़ा होना
- 10. शिक्षा में नाटक और कला